सत्य साहित्य

वर्ष 1 / अंक 1
अक्तूबर 2017
Year 1/ Vol 1
October
2017

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

मैया मोहे मंगल दर्शन दीजे,
विमल तेजोमयी मधुर मूर्ति,
मनोमन्दिर में निहारूं।
ममता-मन्दिर में मां मेरी,
अपना मुझे कर लीजे ॥१॥
भाव भरे भीतर सब आवें,
भक्ति भाव भर आवे।
भारी भरोसा भगवति पाऊं,
ऐसी करुणा कीजे ॥२॥
तेरा प्रेम बसे अंग अंग में,
तेरा राम अलापूं।
वे मैं कर्म करूं जिस से तू,
मुझ पर मैया रीझे ॥३॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- बधाई, (2 अक्तूबर, 13 नवम्बर, 9 दिसम्बर)
- THE CONDUCT OF DEVOTEE (उपासक का आचार)
- प्रश्न उत्तर
- परम पूजनीय प्रेम जी महाराजः प्रवचन
- पूजा कैसी और कैसे ?
- अनुभूति
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹ 5

मंगल-अवतरण

(2 अक्टूबर 1920)

परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज

**"गुरू नाविक भव-सिंधु के, करें शिष्य को पार।
गुरू करूणा कर देत हैं, जीवन के फल चार"।।**

वर्ष में कुछ विशेष तिथियाँ सदैव स्मरण रहती हैं। 2 अक्टूबर, 1920 की तिथि एक दिव्य आत्मा का अवतरण दिवस है। इसलिए 2 अक्टूबर हम सभी साधकों के लिए महत्वपूर्ण तिथि है, जो हमारी अधिकांश स्मृतियों को जागृत कर देती है। आप प्रथम मिलन में ही पूज्य श्री स्वामी जी की शरण में समर्पित हो गए। नाम–दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् आप 'मनसा–वाचा–कर्मणा' गुरू के प्रति समर्पित हो गए। श्री स्वामी जी महाराज ने अपनी दिव्य–दृष्टि से देखकर आपको अपना अंतरंग शिष्य बना लिया। आपमें साधना व सेवा करते–करते आध्यात्मिक शक्तियाँ जागृत हो गयी थीं।

आपकी आध्यात्मिक उन्नति व जागृत अवस्था देखकर श्री स्वामी जी ने अपने जीवनकाल में ही आपको नाम–दीक्षा देने का अधिकार दे दिया था। इस प्रकार आप साधन–सम्पन्न हो गये। किसी के लिये प्रार्थना करने पर आपको आवाज आ जाती थी कि यह उचित है, या अनुचित है। श्री स्वामी जी के महाप्रयाण के पश्चात् दिनांक 29 नवम्बर, 1960 को आपको गुरूपद प्राप्त हुआ। इस प्रकार आप पूज्य श्री स्वामी जी के उत्तराधिकारी हो गये। आपका अवतरण न केवल मानव–उत्थान के लिए हुआ बल्कि जनकल्याण के लिए भी आप हमेशा प्रभु से प्रार्थनाशील रहे, जिससे सहस्त्रों साधकों ने आत्मिक लाभ प्राप्त किया।

आप विलक्षण आध्यात्मिक शक्ति के धनी थे। आप अपने स्पर्श मात्र से साधकों में शक्तिपात् कर देते थे।

आप अपने नाम के अनुरूप परम सरल, सुहृदय व प्रेम की प्रतिमूर्ति थे। श्री स्वामी जी महाराज के ग्रन्थों में जो लिखा है, उसकी आप साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। आपके तेजोमय मुख–मण्डल के दर्शन–मात्र से ही साधकों में बिजली जैसा करंट दौड़ जाया करता था

और साधक अपने अंदर सुखद–शांति का अनुभव करता था। आज भी आपकी सूक्ष्म भावमयी उपस्थिति का भान होता है। आपकी सूक्ष्म भाव–तरंगें सभी का मार्गदर्शन करती हैं। आपके प्रवचन शॉर्ट एंड स्वीट व सारगर्भित होते थे। आपके अखिल क्रिया–कलाप से हम मर्यादा, शिष्टाचार, अनुशासन, नियम–पालन पग–पग पर सीखते हैं। आपकी जीवन–शैली से रामायण व गीता सीखी जा सकती है।

आपकी निर्वाण–तिथि 29, जुलाई 1993 के चार दिवस पूर्व, 25 जुलाई, रविवार को दिल्ली श्री रामशरणम् सत्संग में, आपने अस्वस्थ होते हुए भी 'मंगल नाम राम–राम' की धुन लगाई एवं उस पर खूब नाचे।

आप ज्ञानी भक्त थे। आपके पत्रों को पढ़कर भी आपके ज्ञान एवं विद्वता का परिचय मिलता है। आपके कतिपय पत्रों का सारांश निम्नवत् प्रस्तुत है–

"परमेश्वर के नाम का आराधन करते समय अपने आपको उसी की शरण में अर्पित मानना चाहिए। जब श्रीराम दरबार में पहुँच गये, फिर सांसारिक बातों के लिए व्याकुल होना तो श्री राम–कृपा की अवहेलना करना, समझना ही उचित है। जिस प्रकार हमारे लिए शुभ होता है, उसी हालत में भगवान हमें रखता है। यह भी दृढ़–निश्चय होना उचित है।"

"दूसरों को समझाना बहुत अच्छा है पर देखना तो यह है कि अपने पर आ बनने पर हम कितने स्थिर और शांत रहते हैं। कृपया आप राम–नाम जपते रहें। शेष भगवान आप करेंगे।"

"आपको चिंता शोभा नहीं देती। भगवान में अटल विश्वास होना चाहिए। उसकी हर बात में कृपा मानें।" आप ही तो गाया करते थे–

"जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।"

"यह परमेश्वर की अपार कृपा समझनी चाहिए कि प्रार्थना करने पर वे किसी दूसरे का कष्ट निवारण में हाथ बँटाते हैं। परन्तु विधाता का विधान अटल है। काल के मुँह से बचा लेना, वे आप ही जानें।"

''परमेश्वर अपनी लीला को रचता है, उसमें दृष्टा बने रहने का धैर्ययुक्त हृदय भी देवे तो उसकी कितनी मेहरबानी!''

एक बार सत्संग के दौरान परिचय–कार्यक्रम होने पर साधकगण मेरा नाम यह है, मैं यह कार्य करता हूँ, मेरा नाम यह है कहते हुए सभी अपना–अपना परिचय दे रहे थे। अंत में पूज्य श्री प्रेम जी महाराज खड़े हुए और कहते हैं कि "नाम तो परमेश्वर का है, इस शरीर को प्रेम कहते हैं।" इस प्रकार उन्होंने अपना विद्वतापूर्ण परिचय दिया।

उनके अवतरण के इस मंगल दिवस पर हम सभी उनके चरणों में नत–शिर वंदन करते हैं। जय जय राम !

(एक वरिष्ठ साधक के विचार)

परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के अवतरण दिवस की बधाई

परम संत का मंगल निर्वाण

(13 नवम्बर, 1960)

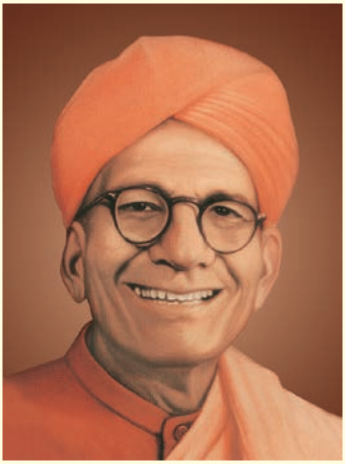

पलटू सतगुरू वचन पर,
जो नाहिं करे विचार।
नाव मिली केवट नहीं,
कैसे उतरें पार।।

श्री ब्रह्मानंद स्वामी की रचना के अनुसार–

"संत परम हितकारी जगत मांही।
प्रभु पद प्रकट करावत प्रीति भरम मिटावत भारी।"

इन पंक्तियों के अनुरूप ही पूज्य श्री स्वामी जी महाराज का व्यक्तित्व था। पूज्यपाद एक विलक्षण एवं अद्वितीय प्रतिभा–सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे। आप एक सच्चे पहुँचे हुए सतगुरू व महान योगी थे। किसी भी आत्मा का आवाह्न करके बात कर लिया करते थे। आपको अनेक आध्यात्मिक सिद्धियाँ प्राप्त थीं।

आपने अनेक शास्त्रों, वेद–पुराण, उपनिषदों के गूढ़ तत्वों का अध्ययन–मनन करने के उपरांत साधकों के कल्याणार्थ सरलतम साधना–पद्धति प्रदान की है। आपके ग्रंथों में एक साधक के लिये सब कुछ है। जैसे दूध में से मक्खन निकालने की प्रक्रिया के बिना ही हमें मक्खन मिल जाए, ठीक इसी प्रकार श्री स्वामी जी महाराज ने कृपा करके हमें विशाल आध्यात्मिक समुद्र में से मंथन कर अमृत–रूपी आवश्यक सरल व सीमित साधन दे दिया है जिससे हम अपना जीवन–निर्माण सहज ही कर पा रहे हैं। उसमें श्री स्वामी जी महाराज की शक्ति का बल भी सम्मिलित है जिसका लाभ हम देश–विदेश में रह रहे लाखों लोग उठा रहे हैं। ग्रंथ–रूप में पूज्य श्री गुरूदेव का मार्गदर्शन सहज व सुलभ है, जिससे हम अपनी क्षमता के अनुरूप लाभान्वित हो रहे हैं।

श्री स्वामी जी ने कोई मत या सम्प्रदाय नहीं बनाया, न ही गुरूपूजा चलाई, न ही स्वयं को कभी पुजवाया। वे गुरू को भगवान नहीं मानते थे। श्री स्वामी जी महाराज ने कहा है– "मुझे परमेश्वर का नाम परमेश्वर के दरबार से प्राप्त हुआ है इसलिए उसके आराधन से अवश्य सभी का कल्याण होगा, नाम तो बड़ा शक्तिशाली है।"

गुरू के मार्गदर्शन के बिना कोई भी मनुष्य इस भवसागर को पार नहीं कर सकता। कोई भी मनुष्य चाहे वह बड़ा विद्वान, तपस्वी, कुलीन ही क्यों न हो, यदि वह गुरू–भक्ति से विहीन है, तो उसका विद्वान, तपस्वी व कुलीन होना व्यर्थ है।

पूज्य श्री महाराज जी का कथन है कि– "परमात्मा ने संत को भवसागर से तारने का अधिकार दिया है। सतगुरू शिष्य के अंतःकरण को सुधारता है– झाड़ू–पोंछा लगाने की तरह। साधक खूब जाप, ध्यान, पाठ, सत्संग आदि करता है, अपने चरित्र को खूब ऊँचा करता है। यह सब देखकर भगवान चुप रहता है। जब तक गुरू या संत उसको recommend न करे तब तक भगवान उसका उद्धार नहीं करता, तारता नहीं है।"

श्री स्वामी जी कहते थे– "चाहे मुझे कोई वहमी कहे, चाहे मैं वहमी हूँ, पर यह कहे बगैर मैं नहीं रह सकता कि हमारे साधना सत्संग में राम कला साक्षात् काम करती है। यह हकीकत है।"

हे श्री स्वामी जी महाराज! कृपा करिए कि हम अपना जीवन आपकी इच्छानुसार बना सकें, इसके लिए हमें बल दीजिए। हम आपके अनेक उपकारों के लिए कृतज्ञ हैं। आपके श्रीचरणों में शत्–शत् नमन, वन्दन। जय जय राम !

(एक वरिष्ठ साधक के विचार) ■

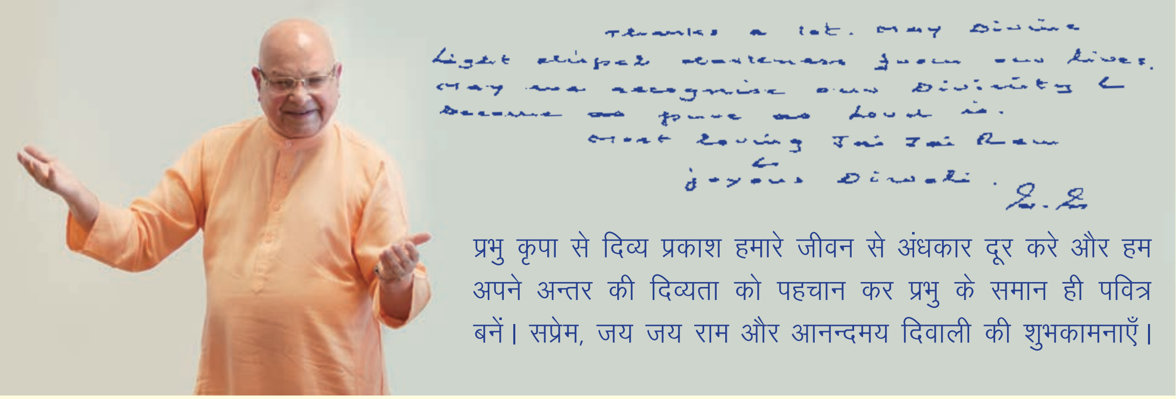

तिलक दिवस

(9 दिसम्बर, 1993)

"गुरू कुम्हार शिष्य कुम्भ है, गढ़-गढ़ काढ़े खोट।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहर मारे चोट।।"

पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के अनन्य व अंतरंग शिष्य थे डॉ. श्री विश्वामित्र जी महाराज।

श्री प्रेम जी महाराज के जीवन–काल में ही आप साधना व सेवा अनवरत करते हुए, श्रीरामशरणम्, दिल्ली के कार्यों में सहयोग करते रहे। आपकी साधना व सेवा को देखते हुए, साधकगण उसी समय से आपको भावी महाराज के रूप में देखने लगे थे।

श्री प्रेम जी महाराज की अस्वस्थता के दौरान आप गुरू–सेवा में पूर्णतः संलग्न रहे। इसके पश्चात् आप मनाली में लगभग साढ़े पाँच वर्ष तपस्या में रत रहे। उस काल आपको अनेक आध्यात्मिक जागृतियाँ उपलब्ध हुईं। पूज्य श्री प्रेम जी महाराज अपने निर्वाण के पूर्व आपको अपनी अनेक आध्यात्मिक शक्तियाँ सूक्ष्म रूप में प्रदान कर गये। तत्पश्चात् 9 दिसम्बर, 1993 को आपको आध्यात्मिक गुरू–पद प्राप्त हुआ। तब से आप मन–वचन–कर्म से पूज्य श्री स्वामी जी के मिशन की समुन्नति के लिये अनवरत सेवा करते रहे।

पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के बनाये नियम व अनुशासन का अक्षरशः पालन करते हुए आपने 'राम–नाम' को देश–विदेश के लाखों लोगों की झोली में डालकर उनका जीवन सार्थक बनाया।

20 जुलाई, 1997 को व्यास–पूर्णिमा पर आपने हरिद्वार में हरि–की–पौड़ी पर स्नान कर अपना चोला बदला। आपने श्री स्वामी जी महाराज के प्रतीक–स्वरूप भगवा कुर्ता धारण किया एवम् श्रद्धेय श्री प्रेम जी महाराज के प्रतीक–रूप श्वेत पायजामा धारण कर जैसे दोनों गुरूदेव की सम्मिलित ऊर्जा के प्रतीक बन गये। श्री स्वामी जी महाराज की प्रखरता तथा उनके जैसा ज्ञान उनमें था एवं श्रद्धेय श्री प्रेम जी महाराज की सरलता व प्रेम जैसे उनमें समाहित हो गया था।

आप आखिरी क्षण तक राम–कार्य में लगे रहे। आपका कथन है– गुरू ब्रह्मा है, जो शिष्य का पुनर्जन्म करता है, जीवन को नई दिशा देता है। गुरू विष्णु है, वो हमारी रक्षा करता है, पाप से हमें बचाता है। पुराने कर्मों को जला देता है, इसलिए वो महेश्वर है, मोक्षदाता है। मुक्तिदाता गुरू है, परमेश्वर नहीं।

पूज्य श्री महाराज कहा करते कि गुरू के शरीर ने सदा नहीं रहना, लेकिन गुरू–तत्व कभी मरता नहीं, गुरू–तत्व आपके साथ है, यह गुरू–भाव है, यह भाव हमारे अंदर होना चाहिए।

गुरू की कृपा–दृष्टि मिल जाए तो पूरा जगत् ही वंदनीय दिखने लगता है, सीतारामम‌य दिखने लगता है।

धन्य हैं हम कि हमारे जीवन में ऐसे सच्चे सद्गुरू, हमारा आज भी सूक्ष्म रूप में पथ–प्रदर्शन कर रहे हैं।

बदऊँ गुरू पद पदम परागा
सुरूचि सुबास सरस अनुरागा।

इसी कृपा की अभिलाषा के साथ उनके श्री चरणों में कोटि–कोटि नमन, वंदन। जय–जय राम !

(एक वरिष्ठ साधक के विचार) ■

THE CONDUCT OF DEVOTEE

सत्यानन्द

Conduct, in the opinion of the scholars well versed in Ethics, consists of deeds and actions enacted through the mind, speech and body. A person's conduct reveals his inner and external life. Wise men believe that righteous and virtuous conduct ('Sadaachaar') renders the life of everyone around happy, pure and illustrious, besides bestowing these good things on oneself. As such, the conduct of the devotee ought to be righteous, ethical and virtuous for his own sake as also for bringing about all round well-being of friends, relatives and the people at large. Such a righteous devotee exercises a positive and benign influence on the life here and hereafter.

Often, it is mistakenly believed that righteous and virtuous conduct does not extend to lending gentleness, sweetness, poise and nobility to the natural tendencies in people. Most people construe good conduct to be limited only to external manners, behaviour and conventional actions. However, the devotee should always remember that undesirable passions and tendencies like anger are definite signs of worsening misconduct. It is for this reason that the devotee of Shree Ram should aspire to be good, simple, sincere and quiet-natured. Never should he become impulsive and short-tempered while working, discharging duties for the family or fulfilling the social obligations. He should consider anger to be the root cause of all the ills and evils that ruin one's life. The devotee's life should be extremely mild and pleasant. Sweetness of 'Ram-Naam' should dwell not in his heart alone, but should also flow from his words just as pure and cool water gushes from a stream.

Speaking rashly or angrily is surely no civilized way of getting anything done or of attempting to improve or reform anybody. Instead, it must be realized that simplicity, cordiality, calmness and sincerity of conduct are more effective in getting things done, besides being instruments of reform. Close friends, relatives and acquaintances should vouch for the quiet, soft-spoken, truthful, graceful and cultured behaviour of Shree Ram's devotee. In this manner, it would be understood beyond doubt (as it ought to be) that the life of the spiritual aspirant is having its desired impact on all others around him.

Jealousy, hatefulness and quarrelsomeness have no place in the life of a spiritual aspirant. While on the one hand, these tendencies work to scorch (burn) the lotus grove of the spiritual aspirant, they also create unrest in the family as well as the society. The people at large should vouch for the devotees of Shree Ram to be beyond discord and strife, attachment and envy, partisanship and obstinacy (fanaticism). Shree Ram's true devotee does not betray these vices and, instead, does more good than those who happen to be afflicted with vices like partisanship, factionalism, discord and strife. It should be known for sure that simple and truthful life acquired through control over passions becomes a potent instrument in reforming and elevating one and all.

Truthfulness, humility and modesty should be deeply rooted in the life of Shree Ram's devotee. Absence of these auspicious traits in a spiritual aspirant is a sure indication of his spiritual journey not progressing in the desired direction and, as such, he remains entangled in the worldly passions. Hence, the spiritual aspirant should be courteous, well-behaved, good-natured, considerate, deferential towards others and pleasantly agreeable in speech

besides being a person of few words.

Slander and talebearing (backbiting) are the two vices which play havoc with a man's life. Condemnation of others only leads to accumulated impression of their vices within oneself. This results in complete ruin of one's own life. The devotee should understand that malicious criticism of others never served as a means of reforming, improving or elevating anyone. The devotee who does not betray these flaws should be looked upon as a person of high order. As it is, we have innumerable flaws and deficiencies. Careful and critical analysis of one's own deficiencies followed by repeated repentance over them would refrain one from noticing the faults and foibles of others. Often, those who never introspect and fail to notice their own failings, keep themselves engaged in exaggerating the faults and weaknesses of others. A devotee who constantly undertakes critical self-examination has neither the inclination nor the time to go about exposing others.

Likewise, slandering, talebearing, exaggerated gossip and creating dissensions - all this gives rise to the filth of malice and ill will. This is a hateful sin. The devotees must be free from it.

It is the bounden duty of the devotee to acquire gentle, winsome, pure and serene disposition by attempting to win over anger by love; vanquish animosity by amity; subdue pride and ego with humility and devoted care of the hapless and the needy and through self-effacing service. The devotee should root out envy through affability, overpower avarice (greed) through charity and overwhelm censure and slander through wholehearted appreciation of the qualities and good deeds of others. It is indeed very necessary for the devotee's life to be receptive to virtues and be characterized by wholesomeness (auspiciousness), sociability and altruism.

Source: Param Pujniya Swami Satyanand Ji Maharaj, Inner Life of Devotee (New Delhi, PP 9-16)

परम पूजनीय श्री महाराज जी के पत्रों के अंश

Question: Pujniya Maharaj Ji what should be done if people have faulted us? Should we move away from people who have hurt us after forgiving them?

Move away, turn your face
but without developing hatred for
anyone on this earth.

With you — a year
full of devotion & dedication.

All love. Jai Jai Ram.

S. S.

Question: Maharaj Ji my brother is very rude. Please tell me what I should do.

May Prabhu Ram bless.
Pray for peace for your brother, during meditation. Increase your japa. Loving Jai Jai Ram.

Question: Maharaj Ji, please give me some rules that I should always follow in my daily life?

Read "Inner life of devotee" in English or Hindi by H.H. Swami Satyananda Ji Maharaj and you get the reply. Loving Jai Jai Ram. Be good and do good.

प्र. महाराज जी, यदि कोई हमेशा हमारी निंदा करे और कमियाँ निकाले तो ऐसे में क्या करना चाहिए? जिन्होंने हमें चोट दी है उन्हें माफ करने के पश्चात् क्या हम उनसे अलग हो जाएँ?

पूजनीय महाराज जी : अलग हो जाइए, अपना मुख मोड़ लीजिए। परन्तु इस संसार में किसी के प्रति द्वेष रखे बिना। आपका नया वर्ष श्रद्धा और निष्ठा से भरपूर हो। सप्रेम, जय जय राम !

प्र. महाराज जी, मेरे भाई का व्यवहार बहुत अभद्र है। कृपया बताएँ मैं क्या करुँ?

पूजनीय महाराज जी : प्रभु राम कृपा करें। ध्यान के समय अपने भाई की शान्ति के लिए प्रार्थना कीजिए। अपना जाप बढ़ाइए। सप्रेम, जय जय राम।

प्र. महाराज जी, कुछ ऐसे नियम बताइए जिसका पालन मैं हमेशा अपनी दिनचर्या में कर सकूँ।

पूजनीय महाराज जी : पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज द्वारा लिखित, 'उपासक का आंतरिक जीवन पढ़िए, आपको उत्तर मिल जाएगा। सप्रेम, जय जय राम ! अच्छा बनें और करें।

परम पूजनीय प्रेम जी महाराजः प्रवचन

प्रेम

हांसी में मुझे जाते देखकर महाराज जी ने कार खड़ी करा के मुझे भी बिठा लिया। महाराज जी के प्रेम से हृदय गद्‌गद् हो गया। चार पाँच सौ नर–नारी गीता भवन में होंगे।

महाराज जी ने अमृतवाणी पाठ के बाद कहा,''कष्ट महान पुरुषों पर ही आया करते हैं।'' महाराज कहा करते थे, ''तभी वह परखे जाते हैं।'' कई लोग कहते हैं कि तुम राम नाम जपते हो और तुम्हें कष्ट भी आते हैं तो क्या लाभ है राम नाम लेने का ? हमारा विश्वास अभी कच्चा होता है और बाहर के कष्टों के कारण हम डोल जाते हैं। कुछ तो अपने पुराने कर्मों के फल स्वरुप होते हैं। जिनका ईश्वर पर विश्वास पक्का होता है, वे डोलते नहीं, उन पर कष्ट का प्रभाव भी नहीं होता। वह ऐसे ही चला जाता है जैसे पानी की लहर !

माँ बच्चे को कभी–कभी उसके हित के लिए डाँटती है। हम थोड़ी सी पूंजी पा कर फूल जाते हैं और थोड़े कष्ट से घबरा जाते हैं। महापुरुष सम रहते हैं ! हर कष्ट में ईश्वर कृपा छिपी होती है। दूसरों की निन्दा से घबराना नहीं चाहिए। जो कुआँ जैसा होता है उसमें से वैसा ही पानी निकलता है। यदि अपने मन में पाप भरा हो तो बाहर की बात से हम तिलमिला उठते हैं। सज्जनों पर इसका कोई प्रभाव नहीं होता। हवा जब सुगन्धित फूलों से गुज़रती है तो उसमें सुगन्ध भर जाती है। और जब गन्दगी से गुज़रती है तो उसमें बदबू आती है।

अभिमान नहीं करना चाहिए। भगवान से कुछ नहीं माँगना चाहिए। केवल नाम की प्रीति माँगनी चाहिए। बड़ा वही है जो निस्वार्थ सेवक है। यदि कोई दोषी आपके कहने पर बदलता नहीं, तो उससे घृणा नहीं करनी चाहिए। ये समझना चाहिए कि हममें त्रुटियाँ हैं जिसके कारण उस पर प्रभाव नहीं पड़ता। परमेश्वर सबमें है, सबसे प्रेम से बरतना चाहिए। परमेश्वर तेरी कृपा सब पर हो और सबमें नाम प्रीति हो।

(हांसी गीता भवन, प्रातः 9:30 से 10:30, दिनांक 10.12.1972)

(परम पूजनीय श्री महाराज जी की डॉयरी से परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के प्रवचन)

Shree Ram Sharnam Mobile App on Apple

The Shree Ram Sharnam App was launched on the auspicious occasion of Guru Purnima 2017 for Apple users for iPhone, iPad and iPod devices. The App has been developed after meticulous efforts by a devoted team of Sadhaks. The App for Android mobile devices had earlier been launched on Guru Purnima in 2016. This App can easily be downloaded from Apple Store for Apple users and Goggle Play Store for Android users.

Minimalist and elegant in design, it has a simple and friendly interface. Tapping the menu icon displays a list similar to the one of the Shree Ram Sharnam website. Users can scroll down the list and select an option by simply tapping on it. The App beautifully integrates pictures, text from Granths and audio of Bhajans and Dhuns. This is a 'must-have' App for all Sadhaks. Younger Sadhaks will earn appreciation and gratitude if they help install the App on the mobile devices of their parents and other elders.

पूजा कैसी और कैसे ?

विश्वामित्र

परमेश्वर की पूजा करने वाले को और किसी भी देवी देवता की पूजा करने वाले को पुजारी कहा जाता है। पूजा करने वाला व्यक्ति ब्राह्मण हो सकता है, पूजा करने वाला व्यक्ति नीची जाति का भी हो सकता है, जो पूजा करता है, वह पुजारी। यह आवश्यक नहीं कि ब्राह्मण को ही पुजारी होना होता है, मेरे जैसा नीच व्यक्ति, नीची जाति का, वह भी पुजारी हो सकता है यदि वह परमात्मा की पूजा करता है तो। ऐसी मान्यताएँ हमारी हैं। राम दरबार में ऐसी मान्यताएँ नहीं हैं वह तो हृदय देखता है, यह नहीं देखता कि वह ब्राह्मण है, क्षत्रिय है, नीची जाति का है, अमीर है या गरीब है, वह आपके हृदय का प्रेम देखता है। जो हृदय के प्रेम से परमात्मा की पूजा करता है वही सच्चे मायने में पुजारी है। उसी को पुजारी कहना चाहिए।

संत महात्मा कहते हैं कि उस पत्थर में तो आपको भगवान् दिखाई देता है लेकिन जो चलता फिरता इन्सान है इसमें भगवान् दिखाई नहीं देता। इसलिये घर-घर में लड़ाई झगड़े फसाद इत्यादि होते हैं। काश! उनमें भगवान् दिखते हों तो उनको दण्डवत प्रणाम किया जाये तो लड़ाई-झगड़ा किस बात का ?

एक यहाँ थोड़ा सा संकेत संत महात्मा करते हैं, जहाँ शब्द पूजा आता है वहाँ प्रायः यह समझा जाता है जो सामने मूर्ति रख के पूजा करते हैं, वही पूजा है। इस प्रकार की मान्यता है हमारी हिन्दू संस्कृति में। पूजा से यही अभिप्राय लेते हैं कि व्यक्ति पत्थर की मूर्ति बना के, संगमरमर की मूर्ति बना के, मिट्टी की मूर्ति बना के, अपने सामने रख लेते हैं, धूप–बत्ती इत्यादि करते हैं, इसी को पूजा कहा जाता है। ऐसी पूजा में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं और यह भी अभिप्राय नहीं कि इस पूजा को किसी प्रकार से घटिया आपके सामने सिद्ध किया जाए। जो संत महात्मा कहते हैं, जो शास्त्र कहता है वह आपकी सेवा में रखा जाता है। यह पूजा है, इसमें कोई शक नहीं। आपने चाहे कोई मूर्ति अपने सामने रखी, उसकी पूजा आरम्भ की, फूल चढ़ाए, पत्ती चढ़ाई, पानी चढ़ाया, धूप इत्यादि किया, इसी को पूजा माना जाता है। क्यों पूजा कर रहे हो उनकी, इसलिए, आपको इस पत्थर में देवता विराजमान दिखाई दे रहा है। यही पत्थर कितने सारे पड़े हुए हैं, कोई नहीं पूछता उनको, एक शिल्पकार उस पत्थर को तोड़ता है, तराशता है, बनाता है, भगवान् कृष्ण की मूर्ति बना देता है। धनुषधारी बनाया हो तो वही पत्थर भगवान् राम बन जाते हैं, वही भगवान् विष्णु बन जाते हैं, वही शिव बन जाते हैं। अब इस पत्थर में भगवान् देखते हो, इसलिये साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते हो। लेकिन यह जो व्यक्ति बैठे हैं, इनमें भगवान् न देख कर इन से लड़ाई–झगड़ा करते हो तो यहाँ हम मार खा जाते हैं।

संत महात्मा कहते हैं कि उस पत्थर में तो आपको भगवान् दिखाई देता है लेकिन जो चलता फिरता इन्सान है इसमें भगवान् दिखाई नहीं देता। इसलिए घर–घर में लड़ाई झगड़े फसाद इत्यादि होते हैं। काश! उनमें भगवान् दिखते हों तो उनको दण्डवत प्रणाम किया जाये तो लड़ाई–झगड़ा किस बात का? बँटवारा किस बात का? भाई, भाई को कचहरी में जा कर खड़ा कर देता है, क्या उन्हें एक दूसरे में भगवान् दिखाई नहीं देते? घर में मत्था टेक कर जाएँगे अपने भाई को हराने के लिये। फैसला मेरे हक में ही हो। भगवान् शिव को पानी चढ़ाने जाएँगे, उन में तो भगवान् दिखाई दे रहा है लेकिन अपने भाई में भगवान् नहीं दिखाई दे रहा। संत महात्मा यहाँ थोड़ी सी भेद की बात बताते हैं। इस पूजा में मात्र इतनी ही त्रुटि है। जो चीज़ आपके सामने रखी है उसमें आपको भगवान् दिखाई दे

रहे हैं। शेष में भगवान् दिखाई नहीं देते, यह बड़ी खतरनाक बात है। मानो यह कहा जाए कि मुख्य अशान्ति का कारण हमारे जीवन में यही है। उदाहरण के लिये शूर्पणखा का जिस वक्त नाक कान काट दिया तो सबसे पहले अपने भाई खर दूषण के पास गई और झूठ बोला, ''मैं उस सुन्दर नारी को अपनी भाभी बनाने के लिये गई थी, उनके साथ एक छोकरा है लक्ष्मण, उसने मेरे नाक–कान काट दिए।'' खर दूषण पहले 14, फिर 14000 राक्षस भेजता है, भगवान् ने उन सबको राम बना दिया, अपना रुप दे दिया, कैसी महानता है भगवान् की। अपने शत्रु को भी अपना रुप दे दिया, मानो यह स्पष्ट करने के लिये कि मात्र मित्रों में ही, भक्तों में ही उपस्थित नहीं हूं, जो मुझे शत्रु मानता है मैं उनमें भी विराजमान हूं । तभी तो कहते हैं कण कण में बसते हैं राम, कौन सी जगह है जहां राम नहीं, कौन सा अन्तःकरण है जहां राम नहीं, कौन सा हृदय है जहां राम नहीं बसते। 14000 के 14000 राम दिखाई देने लगे, सामने व्यक्ति में तो राम दिखाई दे रहा है, मार कहां खाता है व्यक्ति ? जहाँ हम मार खाते हैं, वहाँ राक्षस भी, वही शत्रु है इसीलिए मार कटाई शुरु कर दी, तलवार से काटते हैं, तीर चलाते हैं। काश उनको यह भी दिखाई देता कि मैं भी राम हूँ तो द्वंद मिट जाता, द्वेष मिट जाता। 14000 के 14000 आपस में लड़ कर मर रहे हैं, भगवान दूर खड़े तमाशा देख रहे हैं, अपने ही आप मर गए। यही तो हमारी हालत है। भाई भाई का शत्रु बना है, पिता पुत्र का शत्रु बना है, पड़ोसी पड़ोसी का शत्रु बना है। क्यों? उन्हें पत्थर में तो भगवान् दिखाई देता है लेकिन चलती फिरती मूर्ति में भगवान दिखाई नहीं देते। इसीलिए अशान्ति है, इसलिए शत्रुता और इसीलिए वैर–विरोध है। एक बहुत सुन्दर बात वृंदावन, मथुरा आदि में जाएँ तो वहाँ भक्त लोग जब कोई आता है तो कहते हैं कितनी मूर्तियाँ आई हैं, यानि कितने व्यक्ति हैं ऐसा नहीं कहते। कितनी मूर्तियाँ? घर में आप जो मूर्ति लाते हो उसकी पूजा करते हो, बहू की नहीं, जो जीती जागती मूर्ति है उससे सेवा करवाते हो। काश घर में लाई इस मूर्ति में भी वही मूर्ति दिखाई देती जो पत्थर की मूर्ति में दिखती है तो झगड़े फसाद खत्म हो जाते, जीवन शान्त हो जाते। ऐसी दृष्टि पानी बहुत कठिन है।

कैसे पाई जाये ऐसी दृष्टि? जो राम जपने वाले हैं जब एक दूसरे को मिलते हैं तो राम राम जी कहते हैं, जानते हो अभिप्राय क्या है? राम राम का अर्थ है जो राम तेरे अन्दर है वही राम मेरे अन्दर है।

कैसे पाई जाए ऐसी दृष्टि? जो राम जपने वाले हैं जब एक दूसरे को मिलते हैं तो राम राम जी कहते हैं, जानते हो अभिप्राय क्या है? राम राम का अर्थ है जो राम तेरे अन्दर है वही राम मेरे अन्दर है। कितनी बार यह बात याद दिलाई जाती है। पर जिस वक्त क्रोध आता है तो सब भूल जाते हैं। आगे कौन है भाई, माँ, बाप, छोटा, बड़ा, गुरु, शिष्य कुछ दिखाई नहीं देता। काश यह सत्य उस वक्त दिखाई देता। तो द्वैत, मैं और आप, सास–बहू, पिता–पुत्र सब मिट जाता।

एक सेठ के पास एक महात्मा आया करते, सेठ उसे भोजन खिलाता, वह खाते नहीं थे, साथ ले जाते थे और रास्ते में जहाँ एकान्त दिखता वहीं बैठ कर खा लेते। आज सेठ ने उनको follow किया, सोचा अच्छे महात्मा हैं, विरक्त है, ऐसे महात्मा की सेवा करनी चाहिए, वृथा नहीं जाती, मन हुआ महात्मा के जूठे बर्तन साफ करूँ। कहा, ''महाराज आज मेरे पर कृपा करके मुझे अपने बर्तन साफ करने दो।'' उन्होंने कहा, "नहीं लाला जी, आपसे बर्तन साफ नहीं करवाऊँगा"। सेठ ने सोचा शायद मैं बड़ा आदमी हूँ, इसलिए नहीं करवाना चाहते। बोले, "बर्तन आप मत साफ करें, मेरे नौकर से साफ करवा लें"। अब महात्मा हँसे, कहने लगे, "आपसे करवाने हों या नौकर से मुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं है, यह नौकर और मालिक का सम्बन्ध तो आप ही जानो, मेरे लिये तो दोनों बराबर हैं। महात्मा ने कहा यह नौकर होगा तुम्हारा, मेरे लिए तो जैसे तुम वैसा ही यह है"। ऐसी दृष्टि कैसे प्राप्त हो ?

(क्रमशः अगले अंक में)

MY JOURNEY TO SHREE RAM SHARNAM

I took Naam Deeksha in March 2017. It is like if I had died (to Samsara) and have been born anew to live the true and joyful life of Ram Bhakti. A great peace, joy, assurance and inner strength or power has entered me since Naam Deeksha. Jai Jai Shree Satguru Ji Maharaj ! Jai Jai Shree Ramachandra Patit Pavan!

When the Lord intends to do a thing, He truly does it with excellence, perfection and elegance. The blessings of the Sat-guru are truly necessary and indispensable to the sincere seeker of truth. I have been blessed, humbled and honored by Shree Ram who directed my steps to meet Pujniya Swami Satyanand Ji Maharaj, Pujniya Prem Ji Maharaj and Pujniya Vishwa Mitter Ji Maharaj.

Prostrating before Shree Rama, the Lord of the Universe, and bowing to our Gurujans in seeking their Kripa, I will endeavor in brief to share with the devotees of the Lord Rama, and all interested sincere ones, how I came to Shree Ram Sharnam.

I am an American and I reside in the United States. From my youth to the present day I have been on an intense personal search for God and His True Ways. I was looking for a vision, understanding and experience of God that honestly satisfied the deep needs of the heart as well as the honest inquiries of the mind. I was looking for something more than just nice words and theories about God. I was looking for, seeking for, searching for, the Author of my life.

Approximately two years ago (2015) I was still eagerly searching, when I came across the internet site of Shree Ram Sharnam. I read the simple but profound teachings on the site and immediately, everything I considered there, resonated deeply within me. I discovered in myself an immediate affinity with and attraction for Ram Nam and a desire to visit the Shree Ram Sharnam Centre in Maryland arose within me.

I made arrangements to visit the Shree Ram Sharnam Centre. Just sitting before the pictures of Guru-jans and the Shree Adhisthan Ji I experienced great peace, joy and love that flooded my heart. I felt like as if it was the Lord Himself calling me to Himself through the soulful recitation of Amritvani by the devotees at the Satsang. My heart was moved, deeply touched and my eyes became full of tears. But the tears were tears of happiness, peace and joy. My tears were the tears of a satisfied longing. By nature I am not an emotional person, but I could not help being deeply touched and moved by the Kripa Shakti of the Holy Name and the Kripa Shakti of Guru-jans who found me out and placed their hands of blessings upon my head.

The ache and pain of so many years of soul-searching, seeking and questioning came to an end. The Holy Name of Rama has given me a peace, joy and contentment that I could not anticipate or expect. The Lord is great and wonderful. My only qualification was and is, that I had no qualification. I had no strength or power of my own to establish divine love, peace and contentment in my life. My past search only increased my hunger and desire for God and genuine truth, but my search alone could not satisfy that hunger and desire. Only Lord Shree Rama and His all-satisfying Holy Name could do that. My own strength revealed that I was powerless in regard to securing the divine vision and insight that I needed and searched for. This experience prepared me and led me to just one solution or means, because there was quite honestly nothing else left for me to do. I had done all that I knew in my honest attempts to find the lasting answers and inner experience that I needed. The one thing left for me to do was just simple and complete surrender to the Holy Name. I entrusted myself to the Holy Name of the Lord, knowing that, by so doing, the Lord has taken me into His personal care, and I need not worry or concern myself with anything else except Him and loving-appreciative recitation of His Name.

By profession I am a law enforcement officer. My profession makes many demands on me and takes much of my time. I can say that when I attend the Satsang I never leave empty handed. I receive strength, power, love, encouragement and Grace from the Lord that is more than adequate to meet life head on with enthusiasm, optimism and compassion for everyone. I have received the gift of the Holy Name and the blessings of Guru-jans.

What else can I say except that when the Lord intends to do a thing, He does it beyond our hopes or expectations. He does everything with excellence and perfection. True to His Name, He fills us with pleasantness, pleasure, delight, satisfaction and contentment. It is my hope and desire that the writings and teachings of Bhakti Prakash and other sacred writings of our Guru-jans might be translated into English, so as to enrich and strengthen love for, and recitation of Ram Nam among non-Hindi reading people. I pray that, by the blessings of Ram Nam, anyone who reads these words might find relief, encouragement, joy and contentment in Shree Ram and the holy activities of Shree Ram Sharnam. ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

जून से सितम्बर 2017

साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 से 16 जून को तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 74 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **किश्तवाड़**, जम्मू एवं कश्मीर में 23 जून को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ, जिसमें 81 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **लोट**, हिमाचल प्रदेश में 24 से 25 जून तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 49 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भद्रवाह**, जम्मू और कश्मीर, में 25 जून को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 36 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार**, में 30 जून से 3 जुलाई तक पूजनीय श्री महाराज जी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में तीन रात्री साधना सत्संग हुआ।
- **हरिद्वार**, में 4 से 9 जुलाई तक व्यास पूर्णिमा (गुरुपूर्णिमा) के उपलक्ष्य में पाँच रात्री साधना सत्संग हुआ।
- **दिल्ली**, श्री रामशरणम् में 27 से 29 जुलाई तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में तीन रात्री खुला सत्संग हुआ।
- **रोहतक**, हरियाणा में 12 व 13 अगस्त को दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **रतनगढ़**, राजस्थान में 19 व 20 अगस्त तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 294 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भरतपुर**, राजस्थान में 20 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 89 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कण्डाघाट**, हिमाचल प्रदेश में 27 अगस्त को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 12 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ऑकलैंड**, न्यूज़ीलैंड में 27 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 14 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सीकर**, राजस्थान में 2 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 488 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रेवाड़ी**, हरियाणा में 2 व 3 सितम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 71 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नागपुर**, महाराष्ट्र में 9 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 149 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दुर्ग**, छतीसगढ़ में 10 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 49 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रायपुर**, छतीसगढ़ में 10 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 45 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुरदासपुर**, पंजाब में 15 से 17 सितम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 194 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार**, में 21 से 30 सितम्बर तक रामायणी सत्संग का आयोजन होगा।
- **सिडनी**, ऑस्ट्रेलिया में 30 सितम्बर से 1 अक्तूबर तक खुले सत्संग का आयोजन होगा।
- **दिल्ली**, श्री रामशरणम् में जुलाई से सितम्बर में 194 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- आदिवासी गाँव **बांसगहन (अब्दुल्लागंज)** नज़दीक भोपाल, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का भूमि पूजन 26 जून को सम्पन्न हुआ, नवरात्रों में निर्माण कार्य का शुभारम्भ होगा।
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में श्री रामशरणम् का भूमि पूजन इन नवरात्रों में होने की आशा है। ■

Sadhna Satsang (October 2017 to March 2018)

Haridwar	11 to 14 November	Saturday to Tuesday
Gwalior	24 to 27 November	Friday to Monday
Indore	12 to 15 January	Friday to Monday
Hansi	2 to 5 February	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Tuesday to Friday
Haridwar	27 March to 1 April	Tuesday to Sunday

Open Satsang (October 2017 to March 2018)

Sydney	30 September to 1 October	Saturday to Sunday
Jammu	13 to 15 October	Friday to Sunday
Amritsar	22 October	Sunday
Hisar	28 to 29 October	Saturday to Sunday
Pathankot	4 to 5 November	Saturday to Sunday
Fazalpur (Kapurthala)	18 to 19 November	Saturday to Sunday
Bhiwani	9 to 10 December	Saturday to Sunday
Surat	16 to 17 December	Saturday to Sunday
Sujanpur	23 to 24 December	Saturday to Sunday
Hoshiarpur	31 December	Sunday
Jhabua	7 to 9 January	Sunday to Tuesday
Pilibanga	27 to 28 January	Saturday to Sunday
Bilaspur(HP)	23 to 25 February	Friday to Sunday
Rattangarh	26 to 27 February	Monday to Tuesday
Delhi (Holi)	28 February to 2 March	Wednesday to Friday
Jhabua Maun Sadhana	17 to 26 March	Saturday to Monday

Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam, Delhi (October 2017 to March 2018)

8 October	Sunday	10.30 AM
3 December	Sunday	11.00AM
21 January	Sunday	11.00AM
18 February	Sunday	11.00AM
18 March	Sunday	11.00AM

Purnima (October 2017 to March 2018)

5 October	Thursday
4 November	Saturday
3 December	Sunday
2 January	Tuesday
31 January	Wednesday
1 March	Thursday
31 March	Saturday

Naam Deeksha in Other Centres (October 2017 to March 2018)

1 October	Sunday	Sydney
3 October	Tuesday	Ba(Fiji)
4 October	Wednesday	Nadi (Fiji)
5 October	Thursday	Jabalpur (MP)
8 October	Sunday	Suva (Fiji)
15 October	Sunday	Jammu
20 October	Friday	Labasa (Fiji)
22 October	Sunday	Amritsar
29 October	Sunday	Hisar
29 October	Sunday	Chandigarh
5 November	Sunday	Pathankot
9 November	Thursday	Nagod
19 November	Sunday	Fazalpur (Kapurthala)
24,25,26 Nov.	Friday, Saturday, Sunday	Gwalior
3 December	Sunday	Ujjain
5 December	Tuesday	Sardarsahar
8 December	Friday	Hoshangabad
10 December	Sunday	Bhiwani
17 December	Sunday	Surat
24 December	Sunday	Sujanpur
25 December	Monday	Dewas (MP)
31 December	Sunday	Ludhiana
31 December	Sunday	Hoshiarpur
31 December	Sunday	Dahod (Gujarat)
1 January	Monday	Petlawad
2 January	Tuesday	Thaandla
3 January	Wednesday	Banswara (Rajasthan)
4 January	Thursday	Anjana (Rajasthan)
5 January	Friday	Kushalgarh (Rajasthan)
6 January	Saturday	Bolasa (MP)
7 January	Sunday	Jhabua
21 January	Sunday	Itarsi (MP)
28 January	Sunday	Pilibanga
22 February	Thursday	Bansgahan (MP)
25 February	Sunday	Bilaspur (HP)
27 February	Tuesday	Rattangarh (Rajasthan)

अतिशय विनम्र अनुरोध

सामूहिक प्रार्थना के लिए परम पूज्य श्री महाराज जी ने अनेक श्रीरामशरणम् केन्द्रों में प्रार्थना कोष स्थापित किए हैं। जहाँ विशेष परीक्षण प्राप्त, चुने हुए साधकगणों द्वारा गोपनीयता बरतते हुए निश्चित दिन व समय पर सामूहिक प्रार्थना की जाती है।

यदि व्यक्तिगत रुप से कोई साधक प्रार्थना करना चाहता है या करता है, उसे भी 'प्रार्थना और उसका प्रभाव' के अनुसार चुपचाप (गोपनीयता बरतते हुए) प्रार्थना करनी चाहिए। इससे स्पष्ट है कि श्रीरामशरणम् में परम पूजनीय गुरुजनों ने ढिंढोरा पीटते हुए, सार्वजनिक रुप से प्रार्थना को हतोत्साहित/discourage किया है।वर्ष 2013 एवं 2015 में सभी श्रीरामशरणम् केन्द्रों व व्यवस्थापकों/संचालकों/केन्द्र प्रमुखों की दिल्ली में हुई बैठक में भी प्रार्थना में गोपनीयता के महत्व को रेखांकित करते हुए परिपत्र का पाठ कर, उसे सभी केन्द्रों को उपलब्ध कराया गया था। आशा ये है कि WhatsApp, Facebook, social media के अन्य माध्यमों में किसी भी व्यक्ति/साधक की समस्या को सार्वजनिक करना अथवा उसके लिए प्रार्थना करना, श्रीरामशरणम् की साधना पद्धति व गुरुजनों के अनुशासन के अनुकूल नहीं है। अतः निष्ठावान साधक को इस दिखावटी प्रक्रिया से बचना चाहिए। यदि इस विषय से संबंधित कोई प्रश्न है तो कृपया श्री राम शरणम्, दिल्ली से इस ई. मेल (shreeramsharnam@hotmail.com) पर सम्पर्क करें।

क्षमा याचना सहित। ■

राम नाम का प्रताप

भगवान राम की सभा में एक बार ऋषि विश्वामित्र जी आए। सभी ने खड़े होकर उन्हें प्रणाम किया परन्तु एक राजा बैठा रहा। ऋषि विश्वामित्र जी ने राम जी से उनके लिए मृत्यु दंड माँगा और राम जी ने प्रतिज्ञा कर ली कि सूर्यास्त से पहले पहले वह उस राजा को मार देंगे।

ऐसा सुनते ही राजा भागा–भागा हनुमान जी की माता अंजनी की शरण में चला गया और पूरी बात बताए बिना ही उनसे प्राण रक्षा का वचन ले लिया। माता अंजनी ने तब हनुमान जी को राजा की रक्षा का आदेश दिया। परन्तु जब हनुमान जी को पता चला कि राजा के वध का प्रण भगवान श्री राम ने लिया है तो वह धर्म संकट में पड़ गए कि माता का वचन कैसे पूरा करें ?

हनुमान जी को एक योजना सूझी। उन्होंने राजा को अपने पीछे छिपा लिया और राम राम जपते हुए राम–नाम की एक दीवार खड़ी कर ली। जब भगवान राम वहाँ पहुँचे तो उन्होंने हनुमान जी से राजा को सौंपने को कहा। हनुमान जी ने माता का वचन सुनाया और पुनः राम–नाम जाप करने लगे। राम जी ने अपने वाण चलाने शुरु किए परन्तु राम–नाम की दीवार से लगकर उनका कोई असर नहीं हुआ।

बहुत देर तक प्रभु राम जब राम–नाम रुपी दीवार को न भेद पाए तो गुरु वशिष्ठ को मध्यस्ता करके युद्ध रुकवाना पड़ा और ऋषि विश्वामित्र को उस राजा को क्षमा करना पड़ा। इस प्रकार हनुमान जी ने राम नाम के सहारे श्री राम को भी परास्त कर दिया। धन्य है राम नाम और धन्य हैं प्रभु श्री राम और भक्त हनुमान !

"जिस सागर को बिना सेतु के,
लाँघ सके न राम।
लाँघ गए हनुमान उसी को,
लेकर राम का नाम।।
अन्त में निकला ये परिणाम,
राम से बड़ा राम का नाम।" ■

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924